RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अगस्त
23
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

CPEC का काबुल तक विस्तार / Extension of the CPEC to Kabul

संदर्भ:

अफगानिस्तान, चीन और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों ने आपसी सहयोग को नए आयाम देने पर सहमति जताई है। इस त्रिपक्षीय बैठक में खास तौर पर **चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC)** को **काबुल** तक विस्तार देने पर सहमति बनी, जिससे अफगानिस्तान को क्षेत्रीय आर्थिक नेटवर्क से जोड़ने और व्यापारिक अवसरों को बढ़ाने का रास्ता खुलेगा।

त्रिपक्षीय बैठकों के उद्देश्य:

1. संपर्क और आर्थिक एकीकरण:

- **CPEC का विस्तार**: चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) को अफगानिस्तान तक बढ़ाना, ताकि उसे मध्य एशियाई बाज़ारों से जोड़ा जा सके।
- **रेलवे परियोजनाएँ**: अफगानिस्तान और पाकिस्तान को जोड़ने वाली रेलवे लाइनों का निर्माण पूरा करना।
- **खनिज संसाधन निवेश**: अफगानिस्तान के खनिज संसाधनों की खोज और उनमें चीनी निवेश को बढ़ावा देना।

2. राजनीतिक और कूटनीतिक सामान्यीकरण:

- अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच राजनयिक प्रतिनिधित्व (diplomatic representation) को मज़बूत करना।
- तालिबान सरकार को, वैश्विक मान्यता न होने के बावजूद, **चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** रूपरेखा में औपचारिक रूप से शामिल करना।

3. सुरक्षा सहयोग:

- **पाकिस्तान की चिंता**: पाकिस्तान चाहता है कि अफगान तालिबान, अफगान धरती से संचालित **TTP (Tehreek-e-Taliban Pakistan)** पर कार्रवाई करे, जो अक्सर पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर हमले करता है।
- **चीन की चिंता**: चीन ने **ETIM** पर चिंता जताई है, क्योंकि उसके लड़ाके अफगानिस्तान की धरती से चीन पर हमले करते हैं।

चीन-पाकिस्तान-तालिबान से जुड़ी हालिया बैठक क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक सहयोग के लिहाज से अहम मानी जा रही है।

- **चीन के लिए:** CPEC और BRI परियोजनाओं की सुरक्षा, अफगान खनिज संसाधनों तक पहुंच और मध्य एशिया से व्यापारिक जुड़ाव बढ़ाना।
- **तालिबान प्रशासन के लिए:** राजनीतिक मान्यता का अवसर, आर्थिक निवेश और क्षेत्रीय जुड़ाव के जरिए अलगाव कम करना।
- **पाकिस्तान के लिए:** TTP हमलों पर नियंत्रण हेतु दबाव बनाने का मंच, CPEC परियोजनाओं को पुनर्जीवित करना और मध्य एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में भूमिका मजबूत करना।

भारत पर प्रभाव

1. **CPEC का विरोध –** भारत हमेशा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) का विरोध करता रहा है क्योंकि यह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है। अफगानिस्तान तक इसके विस्तार से पाकिस्तान और चीन की स्थिति और मजबूत होती है, जिससे भारत के दावे कमजोर पड़ते हैं।
2. **रणनीतिक हाशिए पर जाना –** अफगानिस्तान में भारत के ऐतिहासिक योगदान (संसद भवन, अस्पताल, सड़कें, शिक्षा आदि) के बावजूद, यह त्रिपक्षीय ढांचा भारत को पूरी तरह अलग कर देता है।
3. **सुरक्षा के खतरे –** यदि तालिबान को बिना किसी शर्त के अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलती है, तो चीन-पाकिस्तान-अफगानिस्तान की निकटता कट्टरपंथी समूहों को और ताकत दे सकती है, जो भारत के खिलाफ सक्रिय हैं।
4. **कनेक्टिविटी की प्रतिस्पर्धा –** चीन की पश्चिम की ओर कनेक्टिविटी बनाने की पहल भारत की चाबहार पोर्ट परियोजना और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) जैसी योजनाओं के लिए खतरा बनती है।

निष्कर्ष:

चीन-पाकिस्तान-अफ़ग़ानिस्तान त्रिपक्षीय वार्ता यह दर्शाती है कि चीन दक्षिण एशिया में अपने आर्थिक और सुरक्षा हितों को मज़बूत करने की दिशा में सक्रिय है। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी कूटनीति को संतुलित तरीके से संचालित करे—वैश्विक और क्षेत्रीय शक्तियों से संवाद बनाए रखते हुए वैकल्पिक connectivity (जैसे चाबहार पोर्ट और INSTC) तथा security frameworks को आगे बढ़ाए। इस प्रकार ही भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा सुनिश्चित कर पाएगा।

अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका एजेंसी / USAID

संदर्भ:

दिल्ली स्थित अमेरिकी दूतावास ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के हालिया दावे को सिरे से खारिज कर दिया है। ट्रंप ने कहा था कि अमेरिकी सहायता एजेंसी (USAID) ने भारत में मतदाता भागीदारी बढ़ाने के लिए **21 मिलियन डॉलर (लगभग 175 करोड़ रुपये) का फंड** दिया है। दूतावास ने स्पष्ट किया कि भारत सरकार को इस प्रकार की कोई वित्तीय सहायता नहीं प्रदान की गई है।

United States Agency for International Development (USAID):

परिचय:

- **USAID** एक स्वतंत्र अमेरिकी सरकारी एजेंसी है, जो नागरिक विदेश सहायता और विकास सहयोग के लिए ज़िम्मेदार है।
- यह विश्व की सबसे बड़ी सहायता एजेंसियों में से एक है और अमेरिका की आधी से अधिक विदेशी सहायता इसी के माध्यम से दी जाती है।
- **मुख्यालय**: वॉशिंगटन, डी.सी., अमेरिका
- **स्थापना**: 1961, राष्ट्रपति जॉन एफ. केनेडी द्वारा *Foreign Assistance Act* के तहत एक कार्यकारी आदेश (Executive Order) से

उद्देश्य (Aims of USAID):

1. गरीबी उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देना।
2. विकासशील देशों में लोकतंत्र और सुशासन (Governance) को मज़बूत करना।
3. मानवीय सहायता, आपदा राहत और जलवायु लचीलापन में सहयोग।
4. आर्थिक विकास और स्थायी प्रगति को प्रोत्साहित करना।

मुख्य कार्य (Key Functions of USAID):

- NGOs, विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों को विकास परियोजनाओं के लिए फंडिंग।
- आर्थिक वृद्धि, खाद्य सुरक्षा और जलवायु कार्यवाही को बढ़ावा देना।
- संकटग्रस्त देशों में आपातकालीन मानवीय राहत प्रदान करना।
- मानवाधिकार, लोकतंत्र और शासन सुधारों को प्रोत्साहित करना।

यूएसएआईडी का बजट और वैश्विक खर्च

2023 में कुल अंतरराष्ट्रीय सहायता पर अमेरिकी खर्च: 68 बिलियन डॉलर।

यूएसएआईडी का बजट: लगभग 40 बिलियन डॉलर (कुल अमेरिकी सरकारी वार्षिक खर्च 6.75 ट्रिलियन डॉलर का केवल 0.6%)।

फंड का प्रमुख उपयोग:

- **एशिया**
- **उप-सहारा अफ्रीका**
- **यूरोप (हाल के वर्षों में विशेष रूप से यूक्रेन को मानवीय सहायता पर अधिक खर्च)।**

वैश्विक स्तर पर स्थिति:

- अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय सहायता देने वाला देश है।
- तुलना में, ब्रिटेन (चौथा सबसे बड़ा डोनर) ने 2023 में केवल £15.3 बिलियन खर्च किए, जो अमेरिका की सहायता का लगभग एक चौथाई है।

भारत में योगदान (Contribution to India):

स्वास्थ्य पहल:

- मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी।
- टीबी (Tuberculosis), एचआईवी (HIV) और स्वच्छता संबंधी समस्याओं से निपटना।

जल एवं स्वच्छता:

- 1,000 शहरों को *Open-Defecation-Free* बनाने में सहयोग।
- डायरिया से होने वाली मौतों में कमी लाने में योगदान।

स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु लचीलापन:

- सौर ऊर्जा (Solar Energy) के विस्तार में मदद।
- ग्रीन बॉन्ड्स और टिकाऊ वानिकी (Sustainable Forestry) परियोजनाओं को बढ़ावा।

अमेरिकी टैरिफ के बीच भारत-रूस की साझेदारी गहरी / India-Russia Deepen Partnership Amid US Tariffs

संदर्भ:

भारत और रूस ने अपने द्विपक्षीय व्यापार संबंधों का विस्तार करने पर सहमति जताई है। यह कदम इस बात का संकेत है कि रूसी तेल की खरीद को लेकर अमेरिका की टैरिफ संबंधी दबाव नयी दिल्ली और मॉस्को की साझेदारी को प्रभावित करने की संभावना नहीं रखता।

- दोनों देशों का यह निर्णय उनके लंबे समय से चले आ रहे रणनीतिक और आर्थिक रिश्तों की मजबूती को दर्शाता है।

भारतीय विदेश मंत्री का रूस दौरा:

उद्देश्य:

- व्यापार साझेदारी को मजबूत करना।
- भारत के रूस से बढ़े हुए तेल आयात के कारण $58.9 बिलियन के व्यापार घाटे को कम करना।

मुख्य पहल:

1. **व्यापार अवरोधों का समाधान:**
   - अमेरिकी टैरिफ और नॉन-टैरिफ चुनौतियों पर वार्ता।
2. **कनेक्टिविटी बढ़ाना:**
   - प्रमुख मार्गों के जरिए क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करना।
   - अंतरराष्ट्रीय नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (INSTC), नॉर्दर्न सी रूट, और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक कॉरिडोर का विस्तार।
3. **व्यापार विविधीकरण:**
   - भुगतान तंत्र को सुचारू बनाना।
   - भारत-यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) एफटीए का शीघ्र समापन।
4. **बिज़नेस एंगेजमेंट:**
   - B2B संपर्कों को बढ़ावा देना।
   - रूस की कंपनियों को **Make in India** अवसरों में निवेश के लिए प्रोत्साहित करना।

रणनीतिक लक्ष्य:

- 2030 तक व्यापार का संशोधित लक्ष्य: **USD 100 बिलियन**।
- विशेष और प्रिविलेज्ड स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप को मजबूत करना।

भारत–रूस साझेदारी से अमेरिका के टैरिफ दबावों में कमी की संभावना-

ऊर्जा सुरक्षा और लागत लाभ:

- रूस से रियायती दरों पर कच्चे तेल का आयात भारत को ऊर्जा बास्केट स्थिर रखने में मदद करता है, भले ही अमेरिका द्वारा टैरिफ लगाए गए हों।
- इससे आयात लागत कम होती है, महंगाई नियंत्रित रहती है और भारतीय निर्यातकों को अमेरिकी टैरिफ के बावजूद प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलता है।

बाजार विविधीकरण:

- रूस और विस्तृत यूरेशियाई क्षेत्र भारतीय निर्यातकों के लिए वैकल्पिक बाजार उपलब्ध कराते हैं, जिससे अमेरिका पर निर्भरता कम होती है।
- प्रस्तावित **भारत–यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) FTA** रूस, बेलारूस, अर्मेनिया, कज़ाख़स्तान और किर्गिज़स्तान में बड़े बाजार तक विशेष पहुंच प्रदान कर सकता है।

कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक लाभ:

- **इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर, चेन्नई–व्लादिवोस्तोक समुद्री मार्ग**, और **नॉर्दर्न सी रूट** जैसे प्रोजेक्ट निर्यात समय और लागत कम करते हैं।
- इससे अमेरिका के टैरिफ के कारण होने वाली प्रतिस्पर्धात्मक हानि की भरपाई होती है।

ऊर्जा सुरक्षा और लागत लाभ:

- रूस से रियायती दरों पर कच्चे तेल का आयात भारत को ऊर्जा बास्केट स्थिर रखने में मदद करता है, भले ही अमेरिका द्वारा टैरिफ लगाए गए हों।
- इससे आयात लागत कम होती है, महंगाई नियंत्रित रहती है और भारतीय निर्यातकों को अमेरिकी टैरिफ के बावजूद प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलता है।

राष्ट्रीय मुद्राओं और भुगतान तंत्र में व्यापार: रुपये-रूबल लेन-देन तंत्र को मजबूत करना भारत को अमेरिकी डॉलर-प्रधान व्यापार प्रतिबंधों से बचाता है।

रक्षा और रणनीतिक तकनीकी सहयोग:

- रूस रक्षा तकनीक और परमाणु ऊर्जा में प्रमुख आपूर्तिकर्ता बना हुआ है, जिन पर अमेरिका प्रतिबंध लगा सकता है।
- रूस के साथ मजबूत संबंध भारत को रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

औद्योगिक और विनिर्माण अवसर:

- रूस के कच्चे माल और भारत के निर्माण आधार के संयोजन से **Make in India** पहल के तहत संयुक्त उद्यम संभव हैं।
- इससे नए मूल्य श्रृंखला बनती हैं और पश्चिमी आपूर्ति नेटवर्क पर निर्भरता कम होती है।

भारत-नेपाल सीमा विवाद / India-Nepal border dispute

संदर्भ:

भारत ने चीन के साथ लिपुलेख दर्रे के माध्यम से सीमा व्यापार फिर से शुरू करने पर नेपाल की आपत्तियों को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया है और कहा है कि काठमांडू के दावे ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नहीं हैं। भारत और चीन ने लिपुलेख और दो अन्य व्यापारिक बिंदुओं के जरिए व्यापार पुन: शुरू करने पर सहमति व्यक्त की है, जबकि नेपाल का कहना है कि यह क्षेत्र उसके अधिकार क्षेत्र का हिस्सा है।

भारत-नेपाल सीमा विवाद:

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- भारत-नेपाल की सीमा 1816 के **सुगौली संधि** के तहत तय की गई थी, जिसमें **काली नदी** को सीमा माना गया।
- **नेपाल का दावा:** नदी का स्रोत **लिंपियाधुरा** में है, जिससे **कलापानी और लिपुलेख** नेपाल के क्षेत्र में आते हैं।
- **भारत का दावा:** नदी का स्रोत इससे नीचे है, इसलिए यह क्षेत्र **उत्तराखंड** का हिस्सा है।
- दोनों देश **ब्रिटिश युग के नक्शों** का हवाला देते हैं।
- यह विवाद **1960 के दशक** से जारी है और अभी तक अंतिम समाधान नहीं हुआ।

महत्व:

- **लिपुलेख पास**: भारत और चीन को जोड़ने वाला रणनीतिक पर्वतीय मार्ग।
- **कैलाश मानसरोवर यात्रा** का मार्ग; 2020 में सड़क को अपग्रेड किया गया।
- LAC के पास भारत की रणनीतिक मौजूदगी बढ़ाता है।
- ग्रीष्मकाल में भारत-चीन सीमा व्यापार की सुविधा देता है।

राजनयिक विकास और तनाव:

- नेपाल की आपत्ति भारत की सड़क निर्माण और व्यापार पुन: आरंभ के बाद बढ़ी।
- नेपाल का कहना है कि यह द्विपक्षीय समझौतों का उल्लंघन है।
- भारत का कहना: लिपुलेख के माध्यम से व्यापार दशकों से चल रहा है और नेपाल का दावा ऐतिहासिक आधारहीन है।
- कोविड-19 और राजनीतिक कारणों से राजनयिक वार्ता स्थगित रही।

भारत-चीन-नेपाल त्रिकोणीय गतिशीलता:

- यह क्षेत्र भारत के लिए **रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण** है, विशेषकर दक्षिण एशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव के समय।
- 1962 के चीन युद्ध के बाद भारत ने **कलापानी** में सीमा सुरक्षा बल तैनात किया।
- नेपाल इसे **अतिक्रमण** मानता है।
- चीन आधिकारिक तौर पर तटस्थ है लेकिन लिपुलेख के माध्यम से भारत-चीन व्यापार का समर्थन करता है।
- क्षेत्र की रणनीतिक महत्वता बढ़ी है।

भारत-नेपाल संबंधों पर प्रभाव:

- सीमा विवाद ने दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ाया।
- नेपाल में भारत की **एकपक्षीय कार्रवाई** के प्रति अविश्वास बढ़ा।
- नेपाल में राजनीतिक बदलाव, खासकर पीएम **केपी शर्मा ओली** के नेतृत्व में, चीन की ओर झुकाव देखा गया।
- भारत द्वारा नेपाल में **आंशिक रूप से समर्थन किए गए बंद और सीमा विवाद** ने संबंध और जटिल बना दिए।
- खुले सीमा और जन-जन संपर्क के बावजूद राजनयिक संवाद सतर्क और संवेदनशील बना हुआ है।

लिपुलेख दर्रा:

- **स्थिति:** उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में, समुद्र तल से लगभग **5,334 मीटर (17,500 फीट)** ऊँचाई पर।
- **त्रि-सीमा:** भारत, नेपाल और चीन की सीमा के पास स्थित।

- **भौगोलिक महत्व:** भारत को तिब्बत से जोड़ता है।
- **धार्मिक महत्व:** कैलाश मानसरोवर यात्रा का पारंपरिक मार्ग; तीर्थयात्रियों को सीधे **कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील** तक पहुंच प्रदान करता है।
- **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व:** प्राचीन काल से भारत और तिब्बत के बीच **व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान** का प्रमुख मार्ग।
- **रणनीतिक महत्व:** त्रिकोणीय भूभाग में होने के कारण **भू-राजनीतिक दृष्टि से संवेदनशील**।
- **विवाद:** इसकी संवेदनशील स्थिति के कारण समय-समय पर सीमा विवाद और राजनयिक तनाव सामने आते रहे हैं।

स्यूडोमोनास एरुगिनोसा / Pseudomonas aeruginosa

संदर्भ:

जर्मनी के शोधकर्ताओं ने खुलासा किया है कि घातक बैक्टीरिया **Pseudomonas aeruginosa** में **glpD जीन** की अभिव्यक्ति **दोहरी (bistable) रूप से** होती है। इस खोज से बैक्टीरिया के व्यवहार और संक्रमण क्षमता को समझने में नई दिशा मिल सकती है।

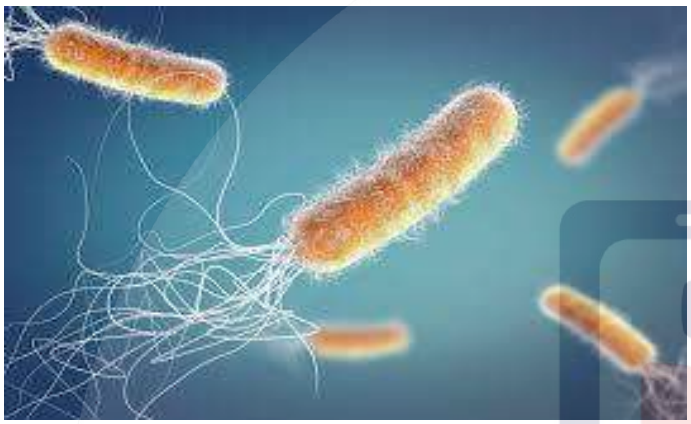

Pseudomonas aeruginosa:

- **परिचय:** Pseudomonas एक बैक्टीरिया समूह है, जो **मिट्टी और पानी** जैसे पर्यावरण में सामान्यत: पाया जाता है।
- **मानव संक्रमण:** सबसे सामान्य प्रकार **Pseudomonas aeruginosa** है। यह **ग्राम-नेगेटिव, एयरोबिक, नॉन-स्पोर फॉर्मिंग रॉड** बैक्टीरिया है।
- **संक्रमण के स्थान:**
  - रक्त (Bloodstream)
  - फेफड़े (Pneumonia)
  - मूत्र मार्ग (Urinary Tract)
  - अन्य अंग, विशेषकर **सर्जरी के बाद**
- **हालिया अनुसंधान के निष्कर्ष:**
  - P. aeruginosa **bistable expression** दिखाता है—यानि इसकी गतिविधि **समान जीन वाले कोशिकाओं में भी अलग-अलग** होती है।
  - इस भिन्नता का असर बैक्टीरिया की **संक्रमण क्षमता** पर पड़ता है, जिसे **मॉथ लार्वा और माउस इम्यून सेल्स** पर परीक्षण से दिखाया गया।
  - अध्ययन सुझाव देता है कि इस जीन की **variable expression** को लक्षित करके अस्पतालों में P. aeruginosa संक्रमण को नियंत्रित किया जा सकता है।

इंटरनेशनल सोलर अलायंस / ISA

संदर्भ:

इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA) 2025 के अंत तक **ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर** भारत में स्थापित करेगा और दुनिया भर में **17 उत्कृष्टता केंद्र (Centres of Excellence)** बनाएगा। इन केंद्रों का उद्देश्य भारत को **"सोलर का सिलिकॉन वैली"** बनाने का है, जहां प्रशिक्षण, परीक्षण और स्टार्टअप्स को समर्थन दिया जाएगा। भविष्य में इन केंद्रों की संख्या 50 तक बढ़ाने की संभावना भी है।

इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA):

परिचय:

- यह एक **वैश्विक पहल** है, जिसे भारत और फ्रांस ने **2015 में COP21, पेरिस** में लॉन्च किया।
- वर्तमान में इसमें **123 सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देश** शामिल हैं।
- मुख्यालय: **गुरुग्राम, भारत**।

उद्देश्य:

- वैश्विक स्तर पर **सौर ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा** देना, विशेषकर **कम विकसित देश (LDCs) और छोटे द्वीप विकासशील राज्य (SIDS)** में।
- **सौर प्रौद्योगिकी और वित्तीय लागत कम करना**।
- **कृषि, स्वास्थ्य, परिवहन और ऊर्जा** जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सौर ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना।
- **सौर अनुकूल नीतियाँ, मानकीकरण, निवेश जुटाना और प्रशिक्षण** को बढ़ावा देना।

भारत की स्थिति:

- जुलाई 2025 तक भारत ने **119 GW सौर क्षमता** स्थापित की है।

महत्व:

- ISA का उद्देश्य **साफ़, किफायती और टिकाऊ ऊर्जा** उपलब्ध कराना और **सतत विकास लक्ष्यों** को पूरा करना है।

डायनासोर / Dinosaurs

संदर्भ:

राजस्थान के जैसलमेर जिले के एक गांव में तालाब की खुदाई के दौरान स्थानीय लोगों को **हड्डी जैसी आकृति और जीवाश्मकृत लकड़ी** जैसे अवशेष मिले हैं। ये अनोखे पत्थरनुमा ढांचे बड़े **कंकाल जैसी संरचना** से मिलते-जुलते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, पश्चिमी राजस्थान में जीवाश्मकृत लकड़ी मिलना सामान्य है, लेकिन हड्डी जैसी संरचनाओं का मिलना इस खोज को विशेष और संभवत: **प्रागैतिहासिक डायनासोर युग से जुड़ा** बना देता है।

डायनासोर के बारे में जानकारी:

परिचय:

- डायनासोर सरीसृपों (रेपटाइल) का एक समूह है।
- ये लगभग **245 मिलियन साल पहले** पृथ्वी पर प्रकट हुए और **66 मिलियन साल पहले** विलुप्त हो गए।
- आधुनिक **पक्षी डायनासोर के वंशज** माने जाते हैं।

शारीरिक विशेषताएँ और जीवनशैली:

- डायनासोर विभिन्न आकार, आकृति और आहार वाले थे।
- ये **जमीन पर चलते थे**, अंडे देते थे और सीधे खड़े होकर चलते थे।
- इनके **पूंछ 45 फीट तक लंबी** हो सकती थी, जो संतुलन बनाए रखने में मदद करती थी।
- कुछ डायनासोर **मानव से छोटे** थे, जबकि कुछ **विशालकाय**।
- वैज्ञानिकों का अनुमान है कि कुछ प्रजातियां **200 साल तक जीवित रह सकती थीं**।

अंडे और प्रजनन:

- सबसे बड़ा अंडा **बास्केटबॉल के आकार** का होता था।
- इसका खोल बहुत **मोटा और मजबूत** होता था।

इतिहास और फैलाव:

- डायनासोर पृथ्वी पर लगभग **160 मिलियन साल** तक रहे।
- इनके अवशेष **अंटार्कटिका** जैसे ठंडे क्षेत्रों में भी पाए गए।

महत्व:

- डायनासोर पृथ्वी के **सबसे प्राचीन और रहस्यमयी जीवों** में गिने जाते हैं।
- इनकी विविधता और आकार ने उन्हें **पृथ्वी पर लंबे समय तक प्रभुत्व बनाए रखने** में सक्षम बनाया।

अभ्यास समन्वय (Samanvay) शक्ति

संदर्भ:

भारतीय सेना ने असम के तिनसुकिया जिले में **अभ्यास समन्वय शक्ति 2025 (Exercise Samanvay Shakti 2025)** की शुरुआत कर दी है। यह अभ्यास सेना की **सामरिक तैयारियों, सहयोग और आपसी समन्वय क्षमता** को मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

अभ्यास समन्वय शक्ति 2025:

- **परिचय:**
  - यह असम और मणिपुर के राज्य अधिकारियों के साथ **सैन्य-नागरिक समन्वय** को मजबूत करने वाली एक महत्वपूर्ण पहल है।
  - यह **10 दिन की Military-Civil Integration Exercise** है, जिसका उद्देश्य सुरक्षा बलों, सरकारी विभागों और नागरिक संस्थाओं के बीच **समन्वय और सहयोग** बढ़ाना है।
- **उद्देश्य:**
  - क्षेत्र की जटिल चुनौतियों का **एकीकृत और समन्वित दृष्टिकोण** से समाधान करना।
  - सुरक्षा, प्रशासन और नागरिक निकायों के बीच **सहयोग और समझ** को मजबूत करना।
- **भागीदारी:**
  - **सैन्य और सुरक्षा बल:** भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना, पुलिस, खुफिया एजेंसियां, NDRF, SDRF।
  - **सरकारी विभाग:** जिला प्रशासन, मेडिकल अधिकारी।
  - **सिविल और अवसंरचना:** BRO & GREF, रेलवे, शैक्षणिक संस्थान।
  - **सुरक्षा अधिकारी और उद्योग:** OIL India, IOCL, Coal India।
  - **संचार माध्यम:** स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधि भी शामिल।

GS FOUNDATION For

UPSC & STATE PSC

- इतिहास
- अर्थव्यवस्था
- भूगोल
- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

1500x4
~~₹6000/-~~

₹4500/-

- रोज़ाना लाइव क्लासेस
- साप्ताहिक टेस्ट
- क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
- लाइव डाउट सेशन
- रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न

COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
₹4000/-
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
BBK
Baaten Bazaar ki
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

EMI AVAILABLE

\+ **(FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)**

FREE

- » Long-Term Investing Foundations
- » Principles of Value Investing and Stock
- » Portfolio Construction Mastery
- » Sectoral Investing
- » Stock Picking Framework
- » Active Portfolio Management Techniques
- » Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR